HERITAGE WALK, PUSHKAR

The 'town of temples', Pushkar or Padmavati is known for its magnetism, religiosity and variety of tangible and intangible cultural heritage. Located at a distance of 14km from Ajmer, it is imagined to be one of the oldest places and also holds a sacred position in amongst the five pilgrimage sites of Hindus. The antiquity and popularity of the town can be traced back to the 2nd century BCE, as the archaeological findings reveal assemblage of coins of the period of Indo-Bactrian, Greek, Kshatrapa and Gupta. From the ancient to the medieval times, the city experienced flourishing trade economy and was ruled by the Gadiyas, Chauhans and Mughals.

The town entwines around Pushkar Sarovar (holy lake), which is believed to have appeared when Lord Brahma dropped a lotus flower. The town has one of the world's few Brahma temples. The cultural spread of Pushkar comprises of over 500 temples and 52 holy ghats which express the hums of sanctity and devotion. Apart from the religious edifices, the town is popular for Pushkar-mela, an annual five-day fair held in the month of Kartik of which the holy dip is an important ritual. The exquisite arts, crafts and scrumptious delicacies add an artistic flavour in the town of Pushkar.

The Heritage Walk is designed to experience Pushkar religiously and architecturally and to link the tangible and intangible assets. The 3.17km Heritage Walk will start from the grand Mahal Badshahi and leads towards Mukhya Brahma Ghat, Brahma Temple, Bade Ganesha Ji Ka Mandir, Gyan Gopal Ji Ka Mandir, Shahi Mosque, Malpua Gali, Ram Laxman Temple, Old Rangji Temple, Varaha Temple, New Rang Ji Temple, Bihari Ji Ka Temple. The walk ends at Jaipur Ghat which is a lively symbol of tranquil and sensuality of the setting sun.

HRIDAY
Rejuvenating the Soul of Urban India

सत्यमेव जयते

Ministry of Urban Development
Government of India

RAJASTHAN
TOURISM

LOCAL SELF GOVERNMENT DEPARTMENT
GOVERNMENT OF RAJASTHAN

PUSHKAR
NAGAR PALIKA

Walk Designed by

Dronah
FOUNDATION
Development and Research Organisation for Nature, Arts and Heritage

A-258, South City-I, Gurgaon-122 001
Phone: 91-(0)124-4082081, 2381067, Fax: 91-(0)124-4269081
Email: dronah@gmail.com, Website: www.dronah.org

HERITAGE WALK, PUSHKAR

Legend

- Heritage Walk - 3.17Km
- Roads
- Lake
- Heritage Site
- Buildings

GYAN GOPAL JI KA MANDIR The double storey temple in Indo-Persian style is believed to have been constructed by the Parashars, around the 19th century CE.

MALPUA GALI: Pushkar is famous for sweets and delicacies. The *gali* (alley) has traditional sweet shops which are about 50 years old, and its special sweet is Malpua made with *maida* (kind of wheat flour) and sugar.

RAM LAXMAN TEMPLE A 19th century property which has both idols of Ram and Laxman. The double storey temple has a projected terrace and foliated arch entrance framing a pointed arch opening.

OLD RANGNATHJI TEMPLE Constructed in 16th century CE by Seth Puranmal Ganeriwal, the single storey temple devoted to Krishna is decorated with mythological frescos in the Italian fresco-bouno technique.

BRAHMA TEMPLE: It is the only temple of Brahma in India. After series of demolitions by the religious bigots, the temple was reconstructed in 1809 CE by Gokul Chand Pareek the Minister of Daulat Ram Scindia. The temple set on a high plinth, is approached through a number of marble steps, which leads to the entrance gate archway, *mandapa* (pillared hall) and *Garbhagriha* (sanctum) that enshrines four-armed deity Brahma.

BADE GANESH JI KA MANDIR Constructed in the 19th century CE, the double storey structure is ornamented with a foliated arch opening. On the upper level, the windows and facade have floral and the railing of terrace has relief carvings.

SHAHI MASJID It is the only mosque built by Aurangzeb in a predominantly Hindu town. The place was originally the location of Kesorai-Ji temple. The corners of the compound wall are vertically extended to form four minars with chhatris on top.

MUKHYA BRAMHA GHAT Constructed around 18th-19th century CE, it is the main ghat with immense historical significance and most of the rituals are performed here. The ghat has a foliated arch gateway with a barrel dome and three pinnacles, and the staircase leading down the lake has structures on either sides.

JAIPUR GHAT Constructed in 18th-19th century CE, this ghat is used for sacred bathing rituals, ancestor worship, and attracts both visitors and residents. It is a famous sunset point decorated with a double storey structure.

Pushkar Lake

BIHARI JI KA TEMPLE It is a large and impressive temple dedicated to Lord Krishna built by the queen of Sawai Jagat Singh.

VARAH TEMPLE Built in the 19th century, it is one of the largest ancient temple of Pushkar. Within a walled area, the temple's massive structure have pilasters, gateways, chhatris and hanging eaves.

NEW RANGNATHJI TEMPLE Constructed in the 20th Century CE .by Seths of the Maheswari caste. The single storey Vaisnavite temple is an example of Dravidian style, and houses a grand idol of Shri Vaikunth Venkatesh and Shri Lakshmi Narsingh. The main entrance has three levels with foliated archway. The interior has an open courtyard, and the main shrine.

MAHAL BADSHAHI: Built in 1613 CE by the Mughal Emperor, Jahangir, the Mahal Badshahi is a symbol of victory over the Maharajas of Mewar. It consists of two identical pavilions built on a rectangular platform with an open square pavilion at the centre that displays Mughal motifs.

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13

Starting point

End Point

Kharekhari Road

NH - 89

हेरिटेज वाक, पुष्कर

'मंदिरों के शहर', पुष्कर या पद्मावती को इसके आकर्षण, धार्मिकता और विभिन्न प्रकार की मूर्त व अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों के लिए जाना जाता है। अजमेर से 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित, इसकी कल्पना सबसे पुराने स्थानों में से एक के रूप में की जाती है और हिंदुओं के पाँच तीर्थ स्थलों में भी इसका एक पवित्र स्थान है। इस शहर की पुरातनता और लोकप्रियता का पता दूसरी सदी ईसा पूर्व तक लगाया जा सकता है, जिसके प्रमाण पुरातात्विक निष्कर्षों द्वारा इंडो–बैक्ट्रियन, ग्रीक, क्षत्रपा और गुप्त काल के सिक्कों के संयोजन से मिलते हैं। प्राचीन से मध्यकालीन समय तक, शहर की व्यापारिक अर्थव्यवस्था खूब फली–फूली और यहाँ गदिया, चौहानों और मुगलों ने शासन किया।

यह शहर पुश्कर सरोवर (पवित्र झील) के आसपास बसा हुआ है, जिसके लिए माना जाता है कि यह भगवान ब्रह्मा द्वारा कमल का फूल गिराने से उत्पन्न हुई। यह शहर दुनिया में उन कुछ स्थानों में से एक है जहां ब्रह्मा के मंदिर मौजूद हैं। पुष्कर के सांस्कृतिक प्रसार में 500 से भी अधिक मंदिर और 52 पवित्र घाट शामिल हैं जहां से पवित्रता और भक्ति की गुनगुनाहट सुनाई देती है। धार्मिक भवनों के अलावा, यह शहर पुष्कर मेले के लिए प्रसिद्ध है, जो कि साल के कार्तिक माह में आयोजित किया जाने वाला पाँच दिवसीय मेला होता है जब एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान के रूप में पवित्र डुबकी लगाई जाती है। उत्कृष्ट कला, शिल्प और शानदार व्यंजन पुष्कर शहर में कलात्मक स्वाद को बढ़ाते हैं।

हेरिटेज वॉक को डिजाइन करने का उद्देश्य पुष्कर का अनुभव धार्मिक और वास्तु–कला के रूप में कराना और मूर्त और अमूर्त संपत्तियों को जोड़ना है। 3.17 किमी लंबी हेरिटेज वॉक भव्य महल बादशाही से आरंभ होती है और मुख्य ब्रह्मा घाट, ब्रह्मा मंदिर, बड़े गणेश जी का मंदिर, ज्ञान गोपाल जी का मंदिर, शाही मस्जिद, मालपूआ गली, राम लक्ष्मण मंदिर, पुराना रंगजी मंदिर, वाराह मंदिर, नया रंग जी मंदिर, बिहारी जी का मंदिर की ओर जाती है। यह वॉक जयपुर घाट पर समाप्त होती है जो डूबते सूर्य की शांति और कामुकता का जीता जागता प्रतीक है।

हेरिटेज वाक, पुष्कर

HRIDAY
Rejuvenating the Soul of Urban India

सत्यमेव जयते
Ministry of Urban Development
Government of India

RAJASTHAN
TOURISM

स्थानीय स्वशासन विभाग,
राजस्थान सरकार

पुश्कर नगरपालिका

Walk Designed by
Dronah
FOUNDATION
Development and Research Organisation for Nature, Arts and Heritage
ए-258, साउथ सिटी-I, गुडगाँव-122 001
फोन: 91-(0)124-4082081, 2381067, फैक्स: 91-(0)124-4269081
ईमेल: dronah@gmail.com, वेबसाइट: www.dronah.org

महल बादशाही: मुगल सम्राट, जहांगीर द्वारा सन 1613 ईस्वी में निर्मित, महल बादशाही मेवाड़ के महाराज के ऊपर जीत का प्रतीक है। इसमें केंद्र में खुले वर्गाकार मंडप के साथ आयातकार मंच पर दो एक समान मंडप हैं जहां मुगल रूपांकन दर्शाए गए हैं।

मुख्य ब्रह्मा घाट इसका निर्माण लगभग 18–19वीं सदी ईस्वी में किया गया था, यह मुख्य घाट है जिसका काफी ऐतिहासिक महत्व है और यहाँ अधिकतर रस्में अदा की जाती हैं। इस घाट में बंदूक की नाल वाले गुंबद और तीन शिखरों वाला बेलबूटेदार मेहराब वाला द्वार है, और झील की ओर जाने वाली सीढ़ियों के दोनों ओर संरचनाएँ हैं।

बड़े गणेश जी का मंदिर इसका निर्माण 19वीं सदी ईस्वी में किया गया था, और यह दो मंजिला संरचना है जिसे बेलबूटेदार मेहराब वाले द्वार से अलंकृत किया गया है। ऊपरी स्तर पर, खिड़कियाँ और सामने का भाग फूलों से सजा है और छत की रेलिंग पर उभरी हुई नक्काशी की गई है।

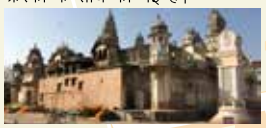

ब्रह्मा मंदिर: भारत में ब्रह्मा का यह एकमात्र मंदिर है। धार्मिक कट्टरपंथियों द्वारा एक के बाद एक विध्वंस के बाद, इस मंदिर का पुनःनिर्माण सन 1809 ईस्वी में दौलत राम सिंधिया के मंत्री गोकुल चंद पारीक द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर एक ऊंचे चबूतरे पर स्थित है, जहां तक संगमरमर की सीढ़ियों द्वारा पहुंचा जा सकता है, जो मेहराब वाले प्रवेश द्वार और चार भुजाओं वाले ब्रह्मा द्वारा प्रतिष्ठापित मंडप और गर्भ गृह की ओर ले जाती हैं।

ज्ञान गोपाल जी का मंदिर माना जाता है कि इंडो–पर्शियन शैली में बने इस दो मंजिला मंदिर का निर्माण लगभग 19वीं सदी में पराशरों द्वारा कराया गया था।

शाही मस्जिद जिसका निर्माण औरंगजेब द्वारा कराया गया था, इस मुख्य रूप से हिंदू शहर में बनी एकमात्र मस्जिद है, जहां पहले केशोराय–जी मंदिर था। अहाते की दीवारों का विस्तार छतरी वाली चार मीनारें बनाने के लिए खड़े रूप में किया गया है।

मालपूआ गली: इस गली में 50 साल पुरानी मिठाई की पारंपरिक दुकानें हैं जो पुष्कर की सबसे प्रमुख अमूर्त विरासत का प्रतिनिधित्व करती हैं यानि मालपूआ जिसे मैदे और चीनी के साथ बनाया जाता है और जो पुष्कर की खास मिठाई है।

राम लक्ष्मण मंदिर यह 19वीं सदी का एक दो मंजिला मंदिर है जिसमें राम और लक्ष्मण की मूर्तियाँ हैं। इसकी छत आगे की ओर बड़ी हुई है और यहाँ बेलबूटेदार मेहराब वाला द्वार है जिसका ढांचा नुकीले प्रवेशद्वार के समान है।

पुराना रंगनाथ जी का मंदिर इसका निर्माण 16वीं सदी में सेठ पूरनमल गनेरीवाल द्वारा कराया गया था। इस एक मंजिला मंदिर की सजावट इतालवी फ्रेस्को–बौनो तकनीक में पौराणिक फ्रेस्को के साथ की गई है।

वाराह मंदिर इसका निर्माण 19वीं सदी में कराया गया था, यह पुष्कर के सबसे बड़े प्राचीन मंदिरों में से एक है। दीवारों से घिरे हुए क्षेत्र के भीतर, मंदिर की विशालकाय संरचना में भित्ति–स्तम्भ, द्वार, छतरियाँ और लटकते हुए छज्जे हैं।

नया रंगनाथ जी मंदिर इसका निर्माण 20वीं सदी में माहेश्वरी जाति के सेठों द्वारा कराया गया था। वैश्णव मंदिर द्रविड़ शैली का एक उदाहरण है, जहां श्री वैकुंठ वेंकटेश और श्री लक्ष्मी नरसिंह की विशाल मूर्तियाँ हैं। मुख्य द्वारा पर बेलबूटेदार मेहराब वाले तीन स्तर हैं।

बिहारी जी का मंदिर यह एक बड़ा और शानदार मंदिर है जो भगवान कृष्ण को समर्पित है और जिसका निर्माण सवाई जगत सिंह (1803–18) की रानी ने कराया था।

जयपुर घाट इसका निर्माण 18–19वीं सदी में कराया गया था, इस घाट का उपयोग पवित्र स्नान, पित्रों की पूजा के लिए किया जाता है, और यह घाट पर्यटकों और निवासियों दोनों को आकर्शित करता है। सूर्यास्त के लिए यह एक प्रसिद्ध स्थान है जिसे दो मंजिला संरचना के साथ सजाया गया है।